SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

हिंदी साहित्य विविध आयाम

डॉ. राजाभाऊ पवार

डॉ. दिलीप गुंजगे

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE
HINGOLI

हिंदी साहित्य : विविध विमर्श

: संपादक :
डॉ. पी. एन. सगर
डॉ. राजाभाऊ पवार डॉ. दिलीप गुंजरगे
जयक्रांती (कला, वाणिज्य व विज्ञान) वरिष्ठ
महाविद्यालय, लातूर

आई पब्लिकेशन्स, लातूर
(महाराष्ट्र)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

Hindi Sahitya Vivdh Vimarsh

पुस्तक	:	हिंदी साहित्य : विविध विमर्श
ISBN	:	978-81-952511-3-1
संपादक	:	डॉ. पी. एन. सगर डॉ. राजाभाऊ पवार डॉ. दिलीप गुंजरगे
प्रकाशक	:	आई पब्लिकेशन्स, लातुर (महाराष्ट्र) माताजी नगर, रिंग रोड, लातुर संपर्क : 9421362107, 9767755911 aaipublicationslatur@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम, 10 अगस्त, 2021
शब्द संयोजन	:	सौ. एस. कुलकणी
मुखपृष्ठ	:	श्री एस. कुलकर्णी
मूल्य	:	300/- (तीन सौ रूपये मात्र)
मुद्रण	:	आई पब्लिकेशन्स, लातुर

* "हिंदी साहित्य : विविध विमर्श" इस पुस्तक में व्यक्त मतों से संपादक का सहमत होना जरूरी नहीं है।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

COLLEGE
S • HINGOLI •

अनुक्रम

1. आदिवासी विमर्श
   1. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी समाज 10
      डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
   2. 'काला पहाड़' उपन्यास में आदिवासी जीवन का यथार्थ 17
      प्रा. डॉ. शहाजी बाला चव्हाण
   3. हिंदी कविता में आदिवासी संवेदना 23
      डॉ. गोकुल महादेव भगत
2. दलित विमर्श
   1. हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श 27
      डॉ. के. के. जाधव
   2. रामदरश मिश्र कृत 'जल टूटता हुआ' उपन्यास में दलित–चेतना 33
      प्रा. कल्याण शिवाजीराव पाटील
   3. हिंदी की दलित आत्मकथाएँ 39
      डॉ. वसंत पुंजाजी गाडे
   4. दलित साहित्य और वैचारिकी का अन्तः सम्बंध 43
      मुकेश कुमार मिरोठा
   5. दलित साहित्य का स्वरूप 51
      प्रा. डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी
   6. दलित विमर्श : हिन्दी साहित्य के संदर्भ में 56
      प्रा. डॉ दिलीप राम गुंजरगे

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में आदिवासी समाज

डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ
सहयोगी प्राध्यापक,हिन्दी विभागाध्यक्ष,
शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली.

उपन्यास आधुनिक काल की सर्वाधिक शक्तिशाली एवं लोकप्रिय विधा है, जो निरन्तर विकसनशील है। हिंदी के आदिवासी उपन्यास अन्य साहित्य से भिन्न रहते है। आदिवासी उपन्यास का उद्देश्य है स्थिर स्थान पर गतिमान समय में जीते हुए आदिवासीयों के समग्र पहलूओं को उद्‌घाटित करना। हिंदी के आदिवासी उपन्यास साहित्य के खाद्य के लिए वन, जंगल, पहाडों, और पहाडों की खोंहों मे बसने वाले आदिवासी जीवन को खोज निकाला है। क्रोबर के अनुसार "आदिम जनजातियाँ ऐसे लोगों का समुह है, जिनका अपनी एक सामान्य संस्कृति होती है।" डॉ. रमणिका गुप्ता के मतानुसार "बिना जंगल, जमीन, अपनी भाषा, जीवन शैली, मूल्यों के बिना आदिवासी, आदिवासी नहीं रह सकता। आदिवासी इस देश का मूल निवासी है। प्रो. विनायक तुकाराम ने आदिवासी शब्द की व्याख्या की है- "एक विशेष पर्यावरण में रहनेवाला, एक-सी बोली भाषा बोलनेवाला, समान जीवन शैली से सजा, एक से देवी-देवताओं को मानने वाला, समान सांस्कृतिक जीवन यापन करने वाला परन्तु अक्षर ज्ञान रहित मानव समुह यानी आदिवासी है।"[2] इस संदर्भ में रत्नाकर भेंगरा तथा बिजोय के अनुसार "आदिवासी के शाब्दिक के शाब्दिक अर्थ से ज्ञात होता है आदि निवासी यानी किसी स्थान पर निवास करने वाला या प्रथम निवासी।"[3]

आदिवासी इस देश के मूल निवासी है। "वे जंगलों, पहाडों में रहकर सदियों से हमारी विरासत संभाले हुए है।"[4] आदिवासी समाज एक ऐसा समाज है, जिसके नाम में ही उसकी पहचान छिपी हुई है। आदिवासी शब्द के लिए 'मूल निवासी' शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। भारत में जितने भी आदिवासी समुदाय है सभी की अपनी-अपनी संस्कृति और सामाजिक परम्पराएँ है।"[5] आज हमारे सामने यह समाज दयनिय स्थिति में दिखाई देता

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI

है। आदिवासी समाज कई समस्याओं से घिरा हुआ है। हिन्दी के उपन्यासकारों ने अनन्त शोषण, दमन, उत्पीडन और अन्याय को सहने वाले आदिवासी जन-जीवन को आधार बनाकर अनेक उपन्यास लिखे है। इन्ही में से कुछ आदिवासी उपन्यास निम्न प्रकार से देखे जा सकता है-

कूमांचल के उदास घरों में बसने वाले आदिवासियों के मलीन चेहरों एवं उदास आँखो की व्यथा हिमांशु जोशी के 'अरण्य' उपन्यास में है। अनाथ कावेरी अपने मामा माधव प्रधान के यहाँ रहकर एक खामोशीभरी जिन्दगी जीती है। हिरदे राम का बिगडैल बेटा मानिक अपने दुर्व्यसनों में भी उसकी सहानुभूति पाता है। एक दिन मानिक अपने अपराध के लिए कावेरी से तिरस्कृत होकर गाँव छोडकर भाग जाता है। बाद में कावेरी की शादी बूढे ठेकेदार के साथ हो जाती है। मानिक, कावेरी के विवाह के बाद फौजी बन गाँव लौटता है। मानिक कावेरी की सोयी पीडा जगाकर वापस फौज में चला जाता है। वह कावेरी की सहायता करता है और एक दिन युध्द में शहीद हो जाता है। कावेरी का पति भी आत्महत्या कर लेता है। कावेरी उपन्यास के अंत तक माणिक की प्रतीक्षा करती है।

'कगार की आग' अँचल जीवन पर लिखा गया उपन्यास न होकर पारिवारिक यथार्थ का उपन्यास लगता है। परिवार के केन्द्र में पहाडी गोमती नामक एक स्त्री है जो परिवार और भ्रष्ट सामाजिक तत्वों से पीडित होती है। वास्तव में गोमती बहुत दुर तक पहाडी नारी की पारिवारिक और सामाजिक यातना का प्रतिनिधित्व करती है किन्तु यह भी कहा जा सकता है कि काफी दूर तक उसे अपनी नियति ने अकेला बना दिया है। लगता है कि अधिक करुणा उपजाने के लिए उसे अनेक प्रकार की यातनाओं से सायास जोड दिया गया है, उसकी प्रतिकुल परिस्थितीयों और पात्रों को कहीं भी गहराई से उभारता है किन्तु कोई नई सामाजिक भूमिका नहीं निर्मित कर पाता। गोमती के अन्त में उभरा हुआ आक्रोश भी व्यक्तिगत धरातल का आक्रोश बनकर रह जाता है।

'पिंजरे के पन्ना' राजस्थान के गाडिया लुहार आदिवासी जाति के जीवन को केन्द्र में रखकर लिखा गया मणि मधुकर का लघु उपन्यास है। रेगिस्तान जिसकी जन्मभूमि है ऐसे गाडिया लुहार और उनके द्वारा निर्मित

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

कला को प्रस्तुत उपन्यास में विशेष स्थान दिया है। आदिवासियों में स्थित इन जातियों की अपनी निजी पहचान, मूल्य, परंपरा, रीति-रिवाज और संस्कृति है। आधुनिकता से यह जीवन पुर्णतः बेखबर है। प्रस्तुत उपन्यास में मुख्यतः तीन कथाओं का समावेश किया गया है। गाडिया लुहार, ख्याल की नायिका पन्ना और नंदेरम्या की लोककला की गवेषणा यह तीन कहानियाँ समांतर चलती है। तीनों कथाओं के माध्यम से रेगिस्तान का संघर्षमय जीवन, यायावर समाज की समस्याएँ एवं वहाँ के लोगों की लोक संस्कृति को वाणी दी है। आदिवासी गाडिया लुहारों की कथा से यायावर जीवन पन्ना की कथा के यायावार जाति की कला प्रदर्शनी एवं लोकला की झाँकी साथ में, नारी शोषण की हृदय द्रावक स्थिति एवं नंदेरम्या की कथा से लोककला के उत्स की गवेषणा का अंकन हुआ है। उपन्यास में कहीं-कहीं शोषण और अन्याय के प्रति चेतना भी पाई जाती है। मूलतः प्रस्तुत उपन्यास लोक जीवन एवं लोक संस्कृति को केन्द्र में रखकर यायावर गाडिया लुहार जाति का जीवंत दस्तावेज बनता है।

राकेश वत्स का 'जंगल के आस-पास' दमकडी के आदिवासियों के जीवन को केन्द्र में रखकर लिखा गया एक सशक्त आंचलिक उपन्यास है। उपन्यास का कथानक दमकडी अंचल और वहाँ के आदिवासीयों से संबधित है। राय साहब दमकडी के अकेले बेताज बादशाह हैं। कानुनन जमींदारी उन्मुलन हो गया लेकीन आज भी उनके ठाठ एक राजा की तरह हैं। युगीन परिवेश में अपनी सत्ता कायम बनाये रखने हेतु षडयंत्र से राजनीति में प्रवेश करके विधायक बन जाता हैं। पुलिस स्टेशन अदालत सभी उन्ही के इशारे पर चलते हैं। दमकडी का सारा इलाका पूँजीपति, महाजन, पुलिस और नेताओं से अत्यधिक आतंकित है। उपन्यास में ओझा का पात्र भी अमानुष का प्रतिक बनकर प्रवेश करता है। ओझा और राय साहब की मर्जी के खिलाफ बहुत कम लोग हैं जो कदम उठाने का साहस करते हैं। यदि करें तो उसके साथ अमानुष व्यवहार किया जाता हैं। एक तरफ दमकडी के आदिवासियों का उच्च वर्ग के द्वारा शोषण निरुपित हुआ है तो दूसरी तरफ वहाँ का प्राकृतिक परिवेश भी चित्रित हुआ है। जंगल एवं पहाडों से घिरे दमकडी अंचल का प्राकृतिक परिवेश अत्यंत जटिल एवं कठिन है। पिछडे और अछूते

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

आदिवासी क्षेत्र का आतंक, शोषण, पिछडापन अभाव आदि उपन्यास के मूल कथ्य है।

आल्मोडा जिले की गहरी घाटीयों में बसे आदिवसी महर ठाकुरों के जीवन को प्रदर्शित करने वाला बटरोही का एक अच्छा आदिवासी जीवन केन्द्रीत उपन्यास 'महर ठाकुरों का गाँव' है। इस उपन्यास की कथा के केन्द्र में अल्मोडा जिले का सीरगाड नामक पहाडी अच्छुता अंचल है। जहाँ महर ठाकुरों की बस्ती है। नई सभ्यता एवं संसार से कटी इस आदिवासी जाति d k v fHk klr t hou i qkZ% Fkd gS v i usv k -पास की दुनिया ही उनका संसार है। धर्म के जाल मे फँसे लोगों की करुण कहानी को उपन्यास वाणी देता हैं। कथा का प्रारंभ हरदा नामक युवक के सीरगाड अंचल में आगमन से होता है। चौदह साल की अवस्था में गाँव से बनारस जाकर धर्मग्रंथ और विधि का अध्ययन कर शास्त्री बनकर आता है। गाँव में व्याप्त अज्ञान, अंधविश्वास, रुग्ण परंपराएँ, पंडितों के प्रति अंधी आस्था उनके द्वारा किया जाने वाला शोषण, भूत–प्रेत की मान्यताएँ, छूआछूत, धार्मिक आडम्बर आदि का जमकर विरोध करता है। गाँव के पाणेज्यू, दलीपसिंह प्रधान आदि को हरदा के काम अखरते हैं। क्योंकि वे चाहते नहीं कि गाँव का विकास हो। अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए वे भोले-भाले गरीब लोगों को दबाए रखते है। अतः संपूर्ण गाँव हरदा के विरोध में खडा होता है किन्तु हरदा टस से मस नहीं होता। वह गाँव के लिए रचनात्मक कार्य करता है। लोगों को शिक्षा, अधिकार, वैज्ञानिकता, रुग्ण परंपराओं का नए सिरे से अध्ययन कर नई मानसिकता तैयार करता है। अतः हरदा के अथक, संघर्षशील प्रयत्नों से संपूर्ण गाँव उपयुक्त दर्जा समस्याओं से मुक्त होता है।

बिहार राज्य के होयहात प्रखंड की डुमरी अंचल है। डुमरी अंचल में भुइयां, तुरी महरा, महतो आदि आदिवासी बसते है। किंतु वनतरी उपन्यास में सुरेशचंद्र श्रीवास्तव ने केवल परहिया आदिवासी जीवन को केन्द्र में रखा है। वन, पहाड, नदियों की खोह में जीवनयापन करने वाली और जंगल पर निर्भर इस आदिवासी जाति का जीवन अन्य आदिवासी जातियों से बिल्कुल

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

पृथक है। उपन्यास का शीर्षक चरित्र प्रधान होने की आशंका उत्पन्न करता है। किन्तु यह मात्र बनतरी का कहानी न के बिरादरी की कहानी है। उपन्यास में कथानक का पुर्णतः अभाव है। इसमें परहिया आदिवासी जीवन का पिछडापन, अभाव ग्रस्तता, प्राकृतिक परिवेश, शोषण और व्यवस्थागत विसंगतियों का यथार्थ लेखा-जोखा प्रस्तुत हुआ है। साथ में मिथिल वनतरी की प्रेम कहानी भी उपन्यास की मूल कथा में अपना स्थान रखती है।

बुध्दू परहिया के घर जन्मी वनतरी के जीवन के साथ कटते जंगल एवं लुप्त होती परहिया आदिवासी जाति के प्रति संवेदना और जीवन संघर्ष को वाणी प्रदान करना उपन्यासकार का लक्ष्य रहा है। सिस्टर मरियम्मा की सहायता से वनतरी हाई स्कूल तक की पढाई पूर्ण करती है। वनतरी पढी-लिखी होने के कारण उसमें अधिकार बोध एवं चेतना संक्रमित होती है। अपनी आदिवासी जाति के लिए अन्याय एवम् शोषण का डटकर विरोध करती है। ठाकुर परमजीत सिंह गाँव के जमीनदार है। जमींदारी टूटने के बावजूद भी वे पूरी तरह से अपनी सत्ता और स्थान कायम बनाए हूए हैं। अपनी राजनीति का प्रयोग करके बडे-बडे अधिकारियों से हाथ मिलाकर सामान्य गरीब गाँव की भोली-भाली जनता को लूटते हैं। उनमें मानवीय संवेदना का अभाव है। वनतरी इन सारी समस्याओं का सामना करती इनका हल खोजती है। वस्तुतः उपन्यास में उपन्यासकार ने वनतरी के माध्यम से एक आदिवासी युवती के विद्रोह को व्यापक फलक पर चित्रित किया है।

प्रकाश मिश्र रचित 'जहाँ बाँस फूलते है' उपन्यास में आदिवासी की जीवन पध्दती उनके रीति–रिवाजों, परम्पराओं, रुढियों, आदर्शों का रेखांकित किया है। लुशेइयों की समस्याओं को उनके जीवन संदर्भों के बीच से उभार कर और जन तथा सरकार दोनों के दृष्टिकोण को सामने रखकर एक बडी जरुरत, एक बडी माँग को पूरा किया है। उन्होंने इस समस्या का कोई हल नहीं प्रस्तुत किया है। किन्तु उन्होंने जो इसकी आंतरिक यात्रा प्रस्तुत की है, पहचान और झाँकी प्रस्तुत की है वह हमें बैलोस सच्चइयों के रु-ब-रु खडा कर देता है। वहाँ का तथ्यपरक जीवन और दास्तान इस तरह से प्रस्तुत हुआ है कि इससे गुजरते हुए आप वहाँ की पहाडियों की उँचाई, कटानों का तीखापन, नदी का बहाव, आसमान की चमक, भूख से ऐंठते आदमी का रंग,

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI •

बूटों की आवाज, शिकारी की चालाकी, हवा की छुअन, धूप की गर्मी अपनी नस-नस में महसूस करेंगे और पायेंगे कि इस तरह उन्होंने हिन्दी साहित्य और उसके माध्यम से भारतीय आदिवासी अस्मिता को रेखांकित किया है।

भगवानदास मोरवाल का 'काला पहाड' देश में बढती हुई सांप्रदायिकता पर गहरी संवेदनाओं को व्यक्त करने वाला आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यास है। स्वार्थी राजनेता सत्ता, संपत्ति पाने के लिए किस सीमा तक गिर सकते हैं इसका बेबाक चित्रण है। सामान्य लोगों को मोहरा बनाकर उनसे राजनीतिक शतरंज खेलते है। आम आदमी ही सांप्रदायिक दंगो में अनान्वित अत्याचारों के ग्रास बनता है। इस कथ्य की कर्मभूमि है हरियाणा, उत्तरप्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित मेवात, जहाँ इस्लाम धर्मी आदिवासी मेव नाम की अल्पसंख्याक हिंन्दूओं के साथ शांति और सद्भावना के साथ वह जाति अपनी जिन्दगी बिताती है। पर कुछ स्वार्थी लोग सांप्रदायिकता का जहर घोल देते है। सदशक्ति की पराजय होती है। काला पहाड की कथा आँचल विशेष की होने पर भी अपनी मूल प्रकृति में पूरे देश का प्रतिनिधित्व करती है। ग्रामीण अर्थ व्यवस्था का टूटना, मानवीय स्नेह सौहार्द का क्षय समूचे देश का कटु सत्य है।

संजीव जी का 'जंगल जहाँ शुरु होता है' उपन्यास आदिवासी धारु जाति और डाकुओं एवं राजनीतिज्ञों के आपसी लडाई को प्रदर्शित करता है। उपन्यास संकेत करता है कि जंगल हर मनुष्य में पनपता रहता है जिससे हमारा अक्सर सामना होता रहता है। भारत नेपाल की सीमा में स्थित चंपारण्य जिले के मिनी चंबल नाम से कलंकित क्षेत्र के आदिवासी धारु जाति का संघर्षमय जीवन यहाँ उकेरा गया है। वहाँ स्थित आदिवासीयों को बार–बार डाकुओं से लडना होता है। प्रशासन, समाज विरोधी तत्त्व, राजनेता, पुलिस आदि से डकुओं को पोषित किया जाता है। गहन चिंतन-मंथन से यह कचोटने वाला तथ्य रेखांकित करते है कि अपराधी मनोवृत्ति रक्तगत वंशगत नहीं होती अपितु तथाकथित सभ्य सफेद पोश राजनेता, पुलिस अधिकारियों के सम्मिलित जुल्म शोषण ही अपराधी तत्त्वों के निर्माता हैं। वे डाकुओं से भी गये गुजरे होते हैं।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE • HINGOLI

मैत्रेयी पुष्पा 'अल्मा कबूत्तरी' आदिवासी जीवन को केंन्द्र में रखकर लिखा गया उपन्यास है। जिसकी कथाभूमि में बुन्देलखंड की कबूतरा नामक आदिवासी जाति है जो अपना संबंध जौहर के लिए किंवदंती बन चुकी रानी पद्मिनी से जोडती है तथा पौराणिक युग तक छलांग लगाकर महादेव शिव के समाज में शामिल हो जाती है। यह जाति आज भी समाज के वृत्त पर डेरा डालकर जीती है। खूटे उखाडे और पुनः गाडे जाते है किन्तु वृत्त के भीतर नहीं परिधि की रेखा से सटे या उससे बाहर।

उपन्यास में प्रमुखत : दो समाजों को चित्रित किया गया है। पहला आदिवासी कबूतरा समाज, दूसरा सभ्य समाज जिसे कबूतरा जाति के लोग अपनी भाषा में कज्जा कहते है। आदिवासी कबूतरा जाति के प्रतिनिधी पात्रों में कदमबाई, भूरी, अल्मा, राणा, रामसिंह, सरमन, दूलन आदि है। सभ्य समाज के प्रतिनिधि पात्रों में मंसाराम, जोधा, कैहर सिंह, राणा, धीरज सूरजभान, श्री रामशास्त्री आदि है।

निष्कर्षत : कहा जा सकता है कि हिन्दी के आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में आदिवासियों के जीवन का सूक्ष्मता के साथ चित्रण किया है। आदिवासीयों का जीवन संघर्षमय रहा है। आदिवासी समाज की आस्थाएं, जीवन पध्दतियॉ, कार्य प्रणाली आदि वैचारिक संगतियों एवं विसंगतियों मान्यताओं एवं लोक संस्कृति आदि को अपने साहित्य में स्थान दिया है।

संदर्भ सूची :

1. सोनी एस. के., राजस्थान के आदिवासी युनिक ट्रेडर्स जयपुर, पृ. 09
2. गुप्ता रमणिका, आदिवासी कौन, राधकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, प्र. स. 2002, पृ. 27
3. वही, पृ. 13
4. संपादक कासांडे अविनाश, हिन्दी साहित्य वर्तमान विमर्श, न्यु मॅन पब्लिकेशन, मुंबई प्र. स. 2016, पृ. 10
5. वही, पृ. 13

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

PRINCIPAL
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)